IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, March 2026
Impact Factor: 8.2

ykd prukoknh c?kyh y[kd M,- pæ

M,- vujkx feJ

शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

egUæ ukjk;.k feJ

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा(म.प्र.)

'kks/k lkjka'k %&

चंद्रिका प्रसाद चंद्र बघेली साहित्य के एक प्रमुख लोकचेतनावादी लेखक, निबंधकार और बघेली संस्कृति के मर्मज्ञ है। इनके कृतियों की केन्द्रीय भावना लोक चेतना और बघेली संस्कृति के इर्द–गिर्द घूमती है, यह लोग संस्कृति को एक संवेदनशील और नैतिक समाज का आधार मानते हैं। इनकी कृतियां लोकायन, लोक के आलोक में, संतो घर में झगड़ा भारी एवं अन्य में ग्रामीण जीवन की सहजता को दर्शाने वाले लोक शब्दों में (गइधुर्वा, संझा बेरी. कालेवा, बिआरी आदि) का बड़ी सहजता से प्रयोग किया है जो उनकी रचनाओं को नई मिठास एवं मिट्टी की शोधी सुगंध प्रदान करता है।

e[; 'kCn %&लोक चेतना, बघेली साहित्य, लोक संस्कृति, चंद्रिका प्रसाद चंद्र।

çLrkouk%&

डॉ. चंद्र जी के साहित्य का केंद्रीय भाव लोक चेतना व भारतीयता रहा है इनकी साहित्य यात्रा में निबंध विधा कहानी विधा, एवं नाटक विधाओं का प्रमुख स्थान रहा है परंपरावादी लेखक एवं भाषाविद् चंद्र जी ने अपने निबंधों में लोक जीवन को एवं लोक चेतना को महत्वपूर्ण स्थान दिया है इनका मानना है कि लोक चेतना ही भारतीय संस्कृति की वास्तविक आत्मा है लोक चेतना ही हमारी भारतीय संस्कृति को सफल करती है तथा उसमें वास्तविक शक्ति का संचार करती है चंद्र जी ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को विशेष कर बघेली संस्कृति और परंपरा तथा लोक चेतना का समावेश किया है अपनी रचना संसार में चंद्र जी ने ग्रामीणों की, अनपढ़ों, एवं कृषकों की जीवन–शैली का अति उत्साही ढंग से चित्रण किया एवं जीवन संघर्षों का सजीव वर्णन किया है। चंद्रिका प्रसाद चंद्र जी ने लोक–जीवन के विभिन्न आयाम जैसे लोग संस्कृति, लोक–भाषा, लोक–विश्वास तथा लोक–मानव की सहजता का विश्लेषण किया है। इनके साहित्य में सांस्कृतिक चिंतन की आधारभूमि लोक चेतना ही है लोक–जीवन की अर्थात् ग्रामीण जीवन की गाथा ग्रामीण सुगंध, आत्मीयता और सरसता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है जो इन्हें आधुनिक साहित्यकारों में अलग पहचान देती है।

बघेली रीति–रिवाजों, परंपराओं तथा लोक–गीतों, लोक कथाओं का अद्भुत वर्णन एवं समावेश उनकी रचनाओं में है। साथ ही साथ बघेली लोक कथाओं का एवं किंवदन्तिओं का बहुत ही मनोरम समावेश किया गया है।

ykd&pruk dh çe[k vk;ke %& लोक–संस्कृति और परंपरा का समावेश चंद्रिका प्रसाद चंद्र जी के निबंधों और अन्य कृतियों में भी मिलता है। इनकी विचारात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैली बघेली साहित्य एवं रीति–रिवाजों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। भारतीय पवो, रीति–रिवाजों और परंपराओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया गया है। लोक–चेतना इनके

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, March 2026 Impact Factor: 8.2

लिए कोई कालबद्ध या जाति बद्ध तक ही सीमित नहीं है अभी तो आचारबद्ध तथा प्रमोध–बद्ध चेतन जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़े रखती है वही इनके लिए सर्वोपरि एवं सर्वश्रेष्ठ है।

ykd ekuo dh xkeh.k thou 'kyh ,oa lgtrk%& ग्रामीण जीवन शैली विशेषकर बघेलखंड के ग्रामीणों की जीवन–शैली, उनकी करुणा, अचार विचार तथा उनकी लोक–भाषा आदि उनके साहित्यक रचनाओं की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। ये हिंदी में आंचलिक बोलियों और लोक–शब्दों के प्रयोग को प्रोत्साहन देते हैं, जिससे भाषा में ग्रामीण मिट्टी की शोधी सुगंध तथा नई मिठास आ जाती है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन लोक–जीवन के दर्शन सहजता से प्राप्त होते हैं, जो उनमें एक प्रकार की आत्मीयता का भाव उत्पन्न करते है। चंद्र जी ने साधारण लोक–मानव की सहजता, सरलता और उनके अकूत बेचौनी तथा सहज निर्वाह ह्रास के प्रति विशेष अनुराग व्यक्त किया है। यह लोग–जीवन में व्याप्त करुणा अहिंसा और भूतानुकंपा को महाभारत के महा सत्य की कसौटी मानते हैं। ये लोकोत्तर की भूमिका को लोक की उपेक्षा करके स्वीकार नहीं करते, बल्कि लोक, संग्रह (COLLECTIVE WELFARE) को ही सबसे बड़ा मूल्य मानते हैं।

pæ th dh –fr;k e ykd pruk dh >yd %& चंद्रिका प्रसाद चंद्र जी ने अपनी रचनाओं में लोक चेतना पर अपनी दृष्टिपात की है एवं विश्लेषणात्मक व्याख्या के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का अत्यंत साहसिक और सराहना पूर्ण कार्य किया हैं और समाज को उनसे अवगत कराने का प्रयास किया है इनकी अनेक कृतियां प्रकाशित हुई है जिसमें लोक–चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इनके द्वारा रचित कुछ कृतियां एवं उनमें व्याप्त लोक–चेतना की झलक आप सब के समक्ष प्रस्तुत है जो कि इस प्रकार हैं।

fj'ru dj fuckg%&इसमें भारतीय संस्कृति और अतीत के प्रति अनुराग के उद्‌गार और बघेलखंड के लोक –जीवन के संस्कारों से जुड़े तथ्यों को दिखाया गया है कि कैसे किसी भी शुभ अवसर पर कढ़ी, फुलौरी, सेवइयां एवं अन्य स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं और जब किसी नव विवाहिता का पति बाहर कहीं रोजगार की तलाश में अपने गांव– परिवार से दूर रहता है तो ससुर और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उसको कैसे संबल प्रदान किया जाता है? तथा कैसे रिश्तो का निर्वाह किया जाता है?

ykd e vkykd e %& इसमें लोक के प्रकाश में कैसे हमारा समाज सूर्य की भांति चमकता रहता है? एवं लोक की भारतीय जीवन–सम्मत तथा वाचिक परंपरा (oral traditions) को उजागर करने का प्रयास किया गया है ।

संतो घर में झगड़ा भारी. इसमें घर–घर में छोटी–छोटी बातों को लेकर होने वाली कलह और उधेड़–बुन की कहानी का वर्णन है।

fu"d"k

चंद्रिका प्रसाद चंद्र जी की कृतियों में लोक चेतना एक अखंड एवं अविभाज्य तत्व है। उनके रचना संसार की आत्मा एवं जड़ लोक–चेतना ही है। जो उन्हें एक लोकचेतनावादी रचनाकार ही नहीं अपितु एक सच्चे लोक–दृष्टा के रूप में स्थापित करती है। इन्होंने अपनी लेखनी द्वारा लोक मानव के शाश्वत मूल्यों एवं लोक–संस्कृति को जीवंतता प्रदान की है। इनकी रचनाएं भारतीय सभ्यता और संस्कृति के उसे मूल्य को स्पर्श करती है, जहां जीवन की सरलता और पवित्रता निहित है। बघेली सभ्यता एवं संस्कृति का सूक्ष्म विश्लेषण एवं विवेचन इन्होंने अपने रचना संसार में किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, March 2026
Impact Factor: 8.2

I nHk xzFk I ph%&

1. चंद्र : चंद्रिका प्रसाद, संतो ! घर में झगड़ा भारी, भोपालः संदर्भ प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2022
2. चंद्रः चंद्रिका प्रसाद, लोक के आलोक में, इलाहाबादः विभा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2019
3. चंद्र : चंद्रिका प्रसाद, रिस्तन केर निबाह, दिल्ली : अनुज्ञा बुक्स प्रकाशक, प्रथम संस्करण, 2023
4. चंद्र : चंद्रिका प्रसाद कुछ अपनी बाकी दुनिया की, इलाहाबादःविभा प्रकाशन प्रथम संस्करण 2016

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in